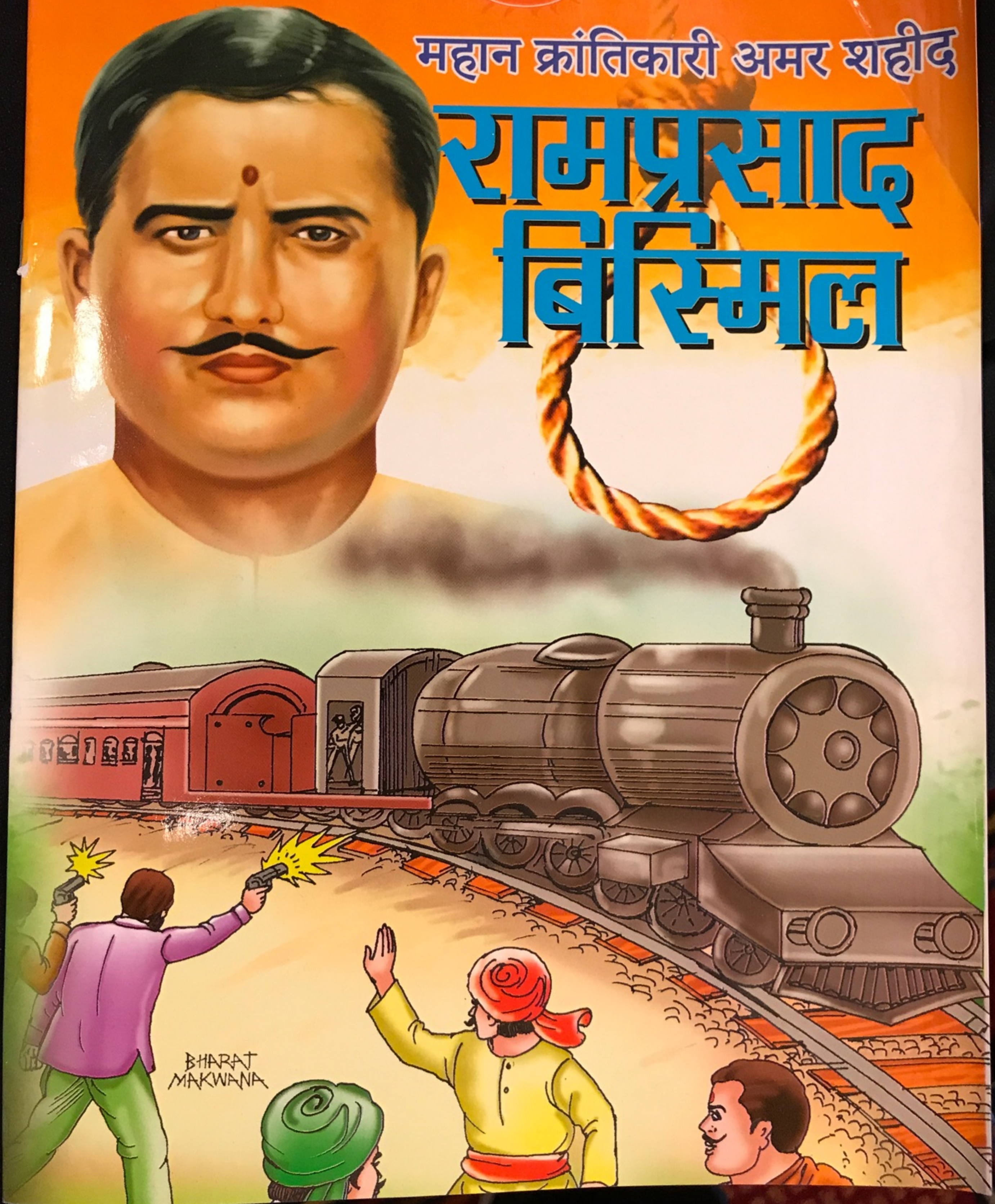
ओ३म्

महान क्रांतिकारी अमर शहीद

रामप्रसाद बिस्मिल



ओ३म्



महान क्रांतिकारी अमर शहीद
रामप्रसाद बिस्मिल

'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' इस अमर गीत को गाते हुए न जाने कितने युवा देश की आजादी के लिए हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर झूल गए। इस गीत के लेखक अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का बचपन बुरी आदतों से भरा था, लेकिन जैसे ही वह आर्यसमाज के सम्पर्क में आए और उन्होंने स्वामी दयानंद का अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ा तो उन्होंने सारी बुरी आदतों को छोड़ दिया और उनका जीवन कुंदन बन गया। फिर उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने का संकल्प लिया और विभिन्न प्रांतों में देशभक्तों को 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के ध्वज तले एकत्र करके क्रांति का बिगुल बजाया। अंग्रेजी सरकार भारतियों को लूटती थी और उन्होंने 'काकोरी' स्टेशन के पास सरकारी खजाने को लूट कर ब्रिटिश सरकार को खुले आम चुनौती दी। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हुए अंततः फाँसी के फंदे को गले लगाया।

रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन पर आधारित यह चित्रकथा विशेषतौर पर बच्चों, किशोरों और युवाओं के लिए तैयार की गयी है, ताकि वे भी उनके जैसे देशभक्त, वीर, निडर और साहसी बन सकें।

ओ३म्

लेखक व चित्रांकन
भारत मकवाना

सम्पादक
डॉ. विवेक आर्य

प्रेरणा :
धर्मपाल आर्य

रामप्रसाद बिस्मिल



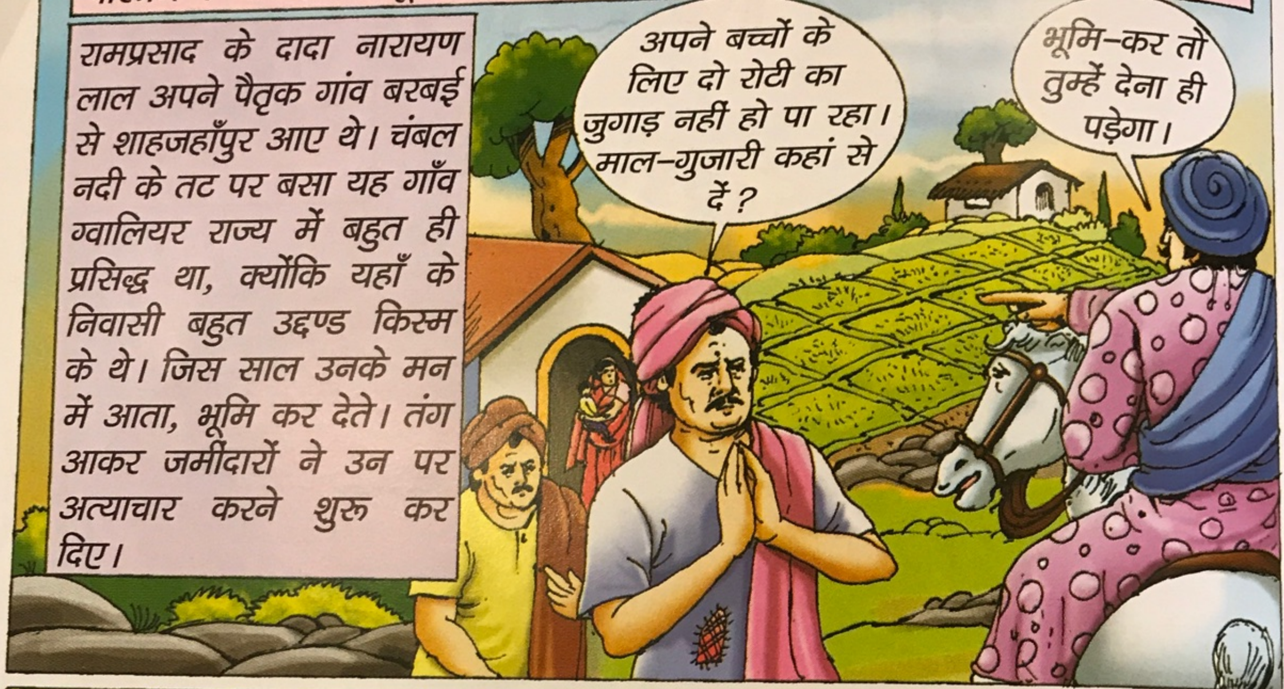
धांय! धांय!!

हम यात्रियों को कोई कष्ट नहीं देंगे, केवल सरकारी खजाना लूटेंगे।

हमारा मकसद केवल देश को जल्द से जल्द आज़ाद कराना है।

यह सरकारी ख़ज़ाने की लूट, 'काकोरी' रेलवे–स्टेशन के पास क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में हो रही थी। क्रान्तिकारी गतिविधियों को तेज करने के लिए 9 अगस्त, 1925 को काकोरी से लखनऊ जाने वाली डाउन पैसेंजर ट्रेन को दिन–दहाड़े रोक लिया और गाड़ी से सरकारी ख़ज़ाने को बिना किसी खून–खराबे के लूट लिया गया।

रामप्रसाद बिस्मिल शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश के एक धार्मिक हिन्दू परिवार में श्री मुरलीधर तथा श्रीमती मूलवती के घर 11 जून, 1897 को पैदा हुए थे। परिवार में हिन्दू प्रथा का पूरी तरह पालन किया जाता था, परन्तु गरीबी के कारण कठिन परिश्रम के बाद ही दो जून की रोटी मिल पाती थी।



पिता मुरलीधर ने रामप्रसाद को उर्दू माध्यम से पढ़ने के लिए इस्लामिया स्कूल में भर्ती कराया परन्तु थोड़ा बड़ा होने पर रामप्रसाद हिन्दी सीखने पर अड़ गए। अब...



...उर्दू के साथ-साथ रामप्रसाद को हिन्दी का ज्ञान भी मिलने लगा।

एक दिन माताजी ने कहा—

रामप्रसाद! तुम्हें अंग्रेजी भाषा भी सीखनी चाहिए।



अब रामप्रसाद अंग्रेजी भाषा भी सीखने लगे।

कुछ समय पश्चात् रामप्रसाद आर्यसमाज मन्दिर जाने लगे–

देखो बेटा! तुम्हें सब बुरी आदतें छोड़ कर ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए और नियमपूर्वक संध्या करनी चाहिए।

बाबा! यह संध्या क्या है और क्यों करते हैं?

बेटा! उस परमपिता का ध्यान लगाना, और उसकी पूजा करना। उसे संध्या कहते हैं।

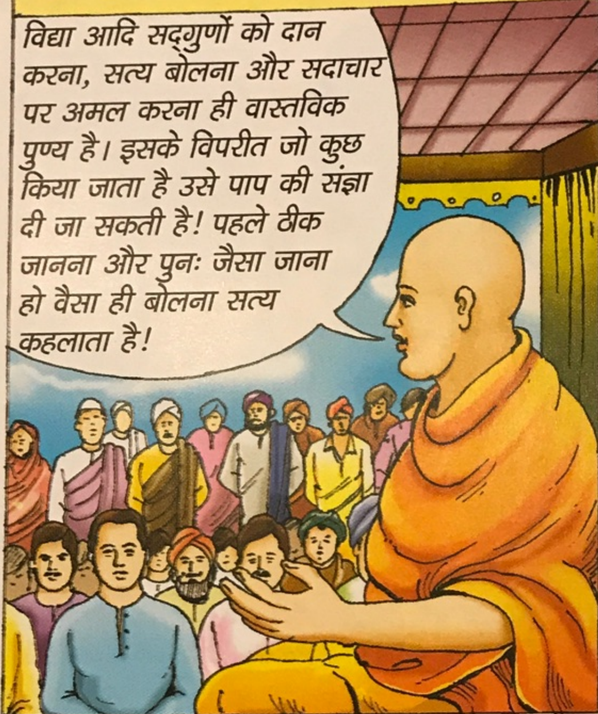
आर्यसमाज में आचार्यजी ने रामप्रसाद को सात्त्विक भोजन करना, सुबह चार बजे उठना, तख्त पर सोना और सुबह सूर्य प्रणाम करने को कहा।

ओ३म् सूर्याय नमः।

आचार्य की ही प्रेरणा से रामप्रसाद ने महर्षि दयानन्द लिखित 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ना आरम्भ किया।

वाह! जैसे-जैसे यह ग्रंथ पढ़ता जा रहा हूँ। मेरे जीवन में बदलाव आता जा रहा है।

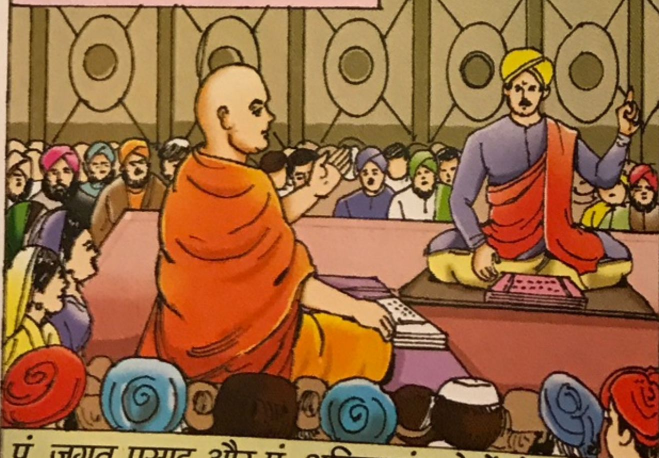
कुछ ही दिनों में रामप्रसाद कट्टर आर्यसमाजी बन गए। वह आर्यसमाज के महात्माओं द्वारा दिए गए उपदेशों को बड़ी श्रद्धा से सुनते थे।



एक बार सनातन धर्मी पंडित जगतप्रसाद शाहजहांपुर पधारे और उन्होंने अपने प्रवचनों द्वारा आर्यसमाज का खंडन करना शुरू कर दिया।



आर्यसमाजियों ने पं. जगत प्रसाद का विरोध किया और उनसे शास्त्रार्थ करने के लिए आर्यसमाजी पं. अखिलानंद को बुला लाए।



पं. जगत प्रसाद और पं. अखिलानंद दोनों में शास्त्रार्थ हुआ अन्त में पं जगत प्रसाद को अपना कथन वापस लेना पड़ा।

पिता मुलरीधर को पता चला कि रामप्रसाद आर्यसमाजी बन गया है तो उन्होंने रामप्रसाद से कहा–



पिताजी के कहने पर रामप्रसाद ने घर त्याग दिया। चलते समय उसने पिताजी के पैर छुए। घर त्यागने...



...के बाद रामप्रसाद एक रात और एक दिन पेड़ पर बैठा रहा। खेतों से हरे चने तोड़ कर खाए। नदी में स्नान किया।

दूसरे दिन संध्या के समय रामप्रसाद आर्यसमाज मन्दिर गया वहाँ पर पं. अखिलानंद जी का प्रवचन चल रहा था। वह पेड़ के नीचे खड़ा होकर प्रवचन सुनने लगा तभी...



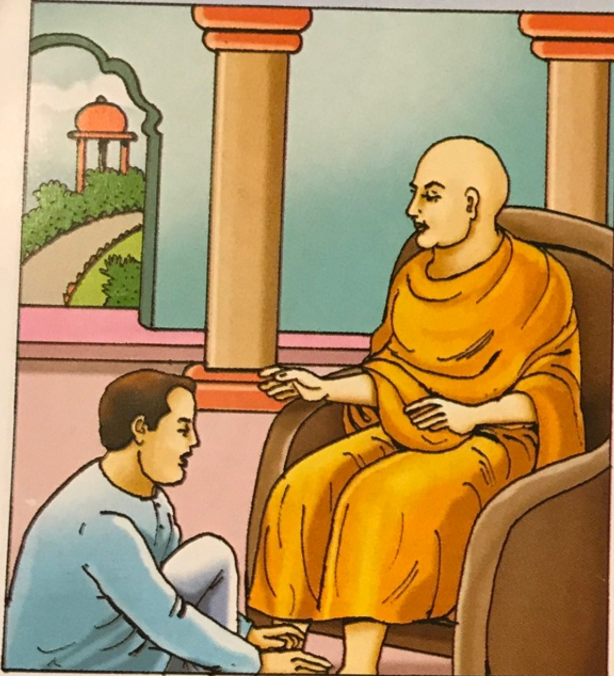
...रामप्रसाद के पिताजी ने उसे पकड़ लिया और उसे...

...स्कूल के हेड मास्टर के पास ले गए। हेड मास्टर ने समझाया–



मास्टर जी के उपदेश पर पिता ने रामप्रसाद पर कभी हाथ नहीं उठाया। रामप्रसाद मन लगा कर पढ़ने लगा और आठवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुआ।

उन्हीं दिनों स्वामी श्री सोमदेव जी सरस्वती शाहजहांपुर के आर्यसमाज मन्दिर में पधारे। रामप्रसाद उनकी सेवा में रहने लगे। वही उनके गुरु और पथ प्रदर्शक थे।



कुछ नव युवकों ने मिलकर 'आर्य कुमार सभा' खोली। वहां धार्मिक पुस्तकों का पठन-पाठन, निबन्ध लेखन व वाद-विवाद होता था।



उन्हीं दिनों मिशन स्कूल के एक विद्यार्थी से रामप्रसाद का परिचय हुआ। उस विधार्थी का आचरण ठीक नहीं था।



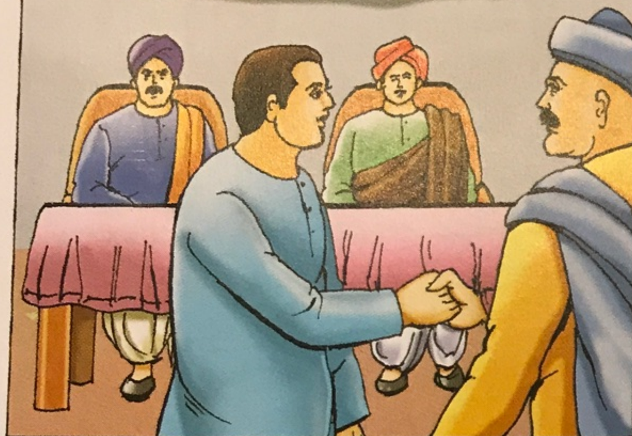

जब पिता मुलरीधर को उस लड़के के बारे में पता चला तो उन्होंने रामप्रसाद को प्यार से समझाया–
देखो, बेटा रामप्रसाद! वह लड़का तुम्हारी मित्रता के लायक नहीं है।
रामप्रसाद ने पिता की बात मान कर उस लड़के से मित्रता तोड़ दी।


उसके बाद रामप्रसाद सन्मार्ग पर चलने लगा और अपनी माताजी की प्रेरणा से काम करने लगा।
बेटा रामप्रसाद! जीवन कीमती है। तुम्हारे हाथों से कभी भी किसी का अहित न हो।


श्री स्वामी सोमदेव से रामप्रसाद को पुस्तकें व अख़बार पढ़ने का शौक उत्पन्न हुआ।


पं. श्री राम बाजपेयी जी ने शाहजहांपुर में सेवा–समिति की नींव डाली। रामप्रसाद वहाँ भी बड़े उत्साह पूर्वक भाग लेने लगे।
मैं भी 'सेवा समिति' में भाग लेना चाहता हूँ।
सेवा समिति
अवश्य!

लखनऊ में अखिल भारत वर्षीय कांग्रेस का उत्सव हुआ। उसमें रामप्रसाद बिस्मिल भी सम्मिलित हुए।



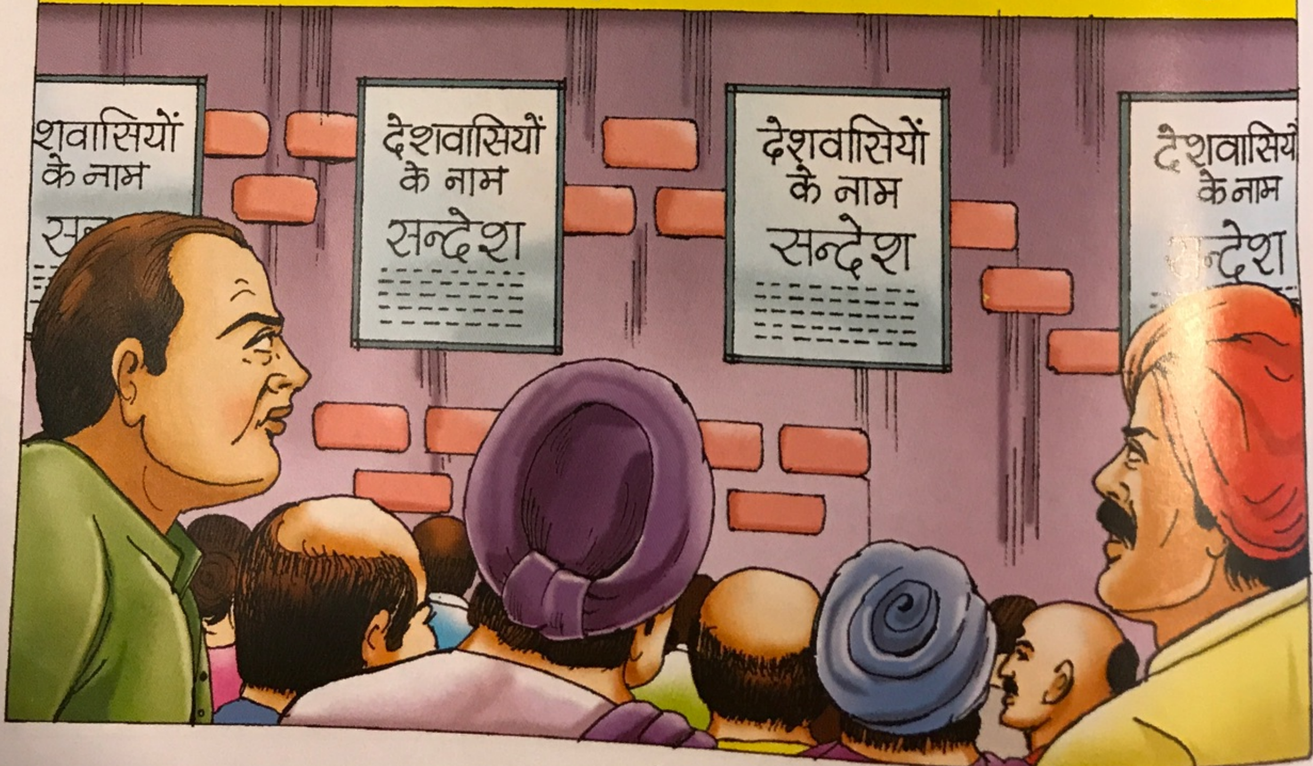
उसी अधिवेशन में रामप्रसाद की मुलाकात लोकमान्य तिलक से हुई।

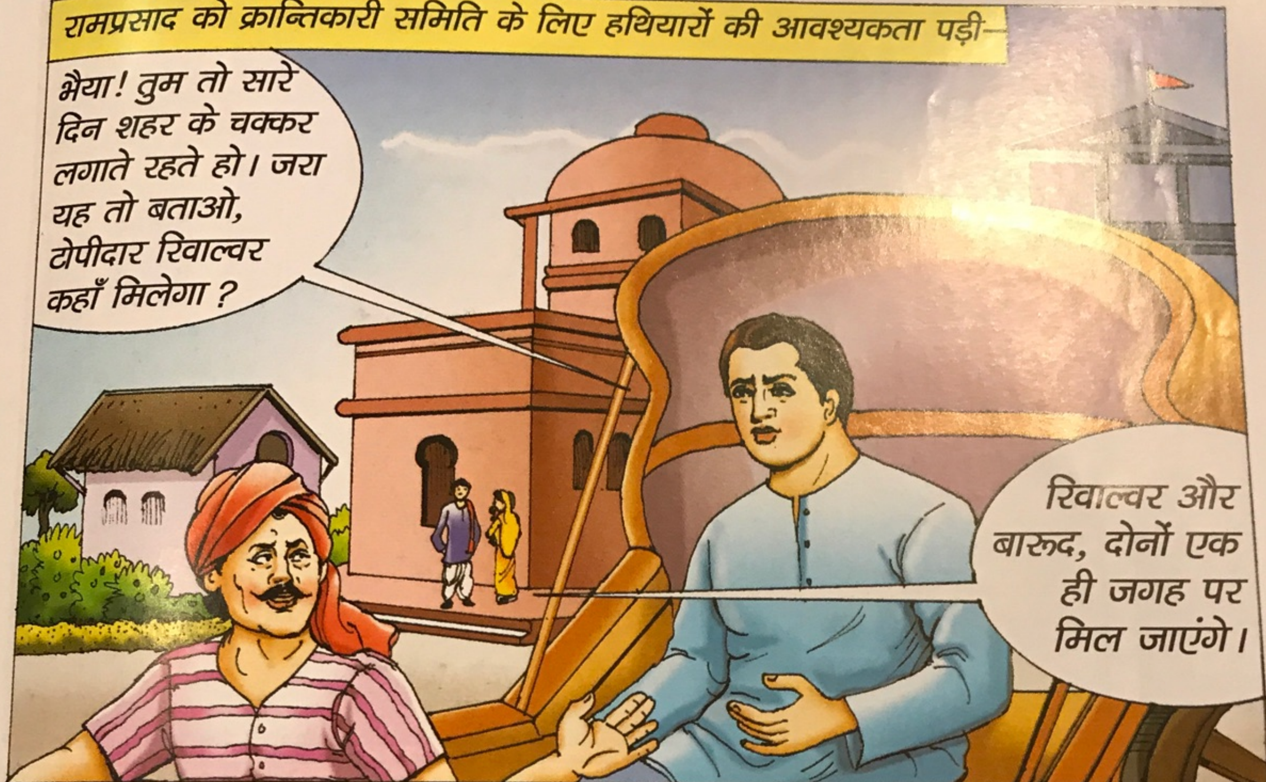
रामप्रसाद लखनऊ में एक गुप्त समिति के सदस्य बन गए, जिसका मुख्य उद्देश्य क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेना था। एक बार समिति के कार्य में धन की कमी आ गयी।



मां ने रामप्रसाद को रुपये लाकर दे दिए।

उसी पैसे से समिति वालों ने 'देशवासियों के नाम सन्देश' नामक पर्चा छपवाया...और कई जिलों में लगवाए, लेकिन दोनों संयुक्त प्रांत की सरकार ने पर्चे जब्त कर लिए।





हथियार खरीदने–बेचने का सिलसिला अब शुरू हो चुका था। हथियार बनाने वाले कारखानों की लिस्टें लेकर तीन–चार क्रान्तिकारी समिति के सदस्य हथियार खरीदने निकल पड़े।





इतना सुनते ही क्रान्तिकारी समझ गये कि ये तो खुफिया पुलिस वाला है—



सभी क्रान्तिकारी हथियार फेंक कर भाग गए और...

...खुफिया इंस्पेक्टर देखता ही रह गया।



कांग्रेस के जलसे में रामप्रसाद शाहजहांपुर की सेवा-समिति के साथ अपनी एम्बुलेंस की टोली लेकर दिल्ली गया था, पंडाल के बाहर खुले रूप में यू.पी. सरकार द्वारा जब्त की गयी पुस्तक 'अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली' नवयुवक बेच रहे थे।



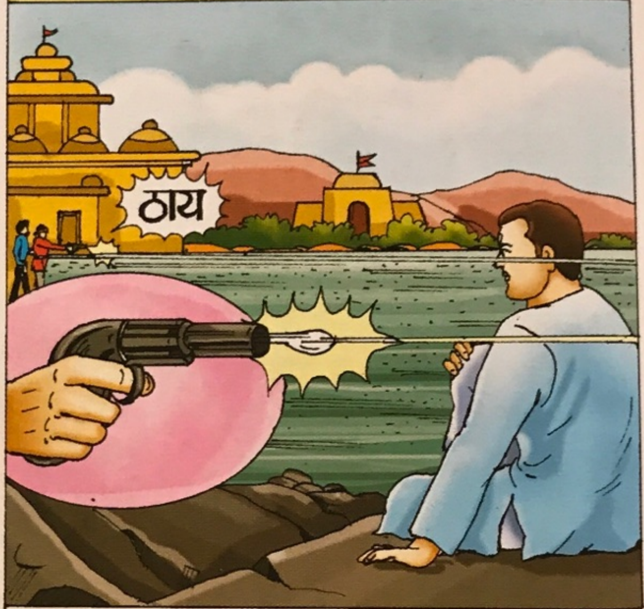
रामप्रसाद दिल्ली से लौटकर शाहजहांपुर आए। वहां पर भी पकड़-धकड़ शुरू हो गयी। रामप्रसाद के सभी क्रांतिकारी साथी अपने-अपने घर छोड़कर चले गये थे। रात का समय था, तभी पीछे से आवाज आई-



रामप्रसाद कुछ दिन प्रयाग की धर्मशाला में ठहरे।



एक बार रामप्रसाद यमुना के किनारे बैठे थे, तभी वहां से कुछ दूरी पर बैठे तीन व्यक्तियों में से एक ने रामप्रसाद पर पिस्तौल द्वारा गोली चला दी। गोली राम प्रसाद के कान के पास से निकल गयी।



इस घटना के बाद रामप्रसाद में बदले की भावना भर गयी वह अपने गाँव चले आए। गाँव में आकर बीमार हो गए।



रामप्रसाद की माताजी को जब उसके बदले की भावना का पता चला तो उन्होंने उनसे प्रतिज्ञा करायी

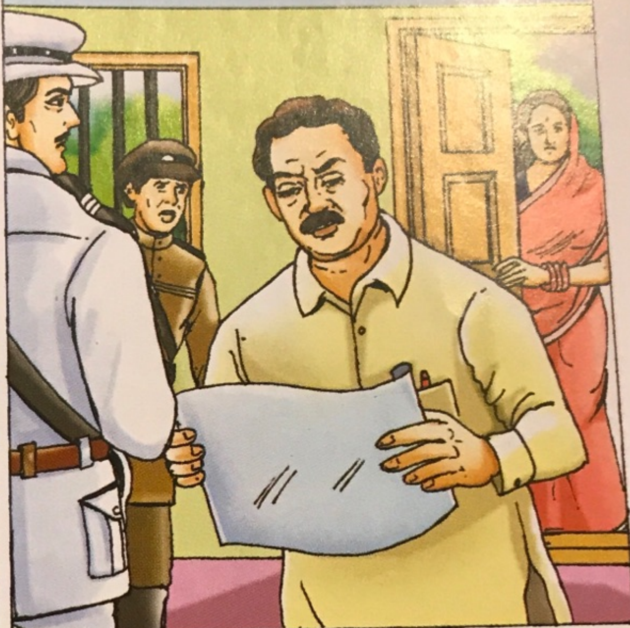


रामप्रसाद का जब थोड़ा स्वास्थ्य सुधार हुआ तो—

माताजी! अब मैं गाँव में रह कर खेती करूँगा।

हाँ, बेटा! शारीरिक परिश्रम से तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा हो जाएगा।

रामप्रसाद के पिता को अंग्रेज सरकार की ओर से नोटिस दिया गया कि लड़के की गिरफ्तारी होगी या उसका हिस्सा, जो उसके दादा की जायदाद से होगा, उसे नीलाम किया जायेगा।



रामप्रसाद को फिर पैसे की तंगी रहने लगी। उसने बंगला भाषा का अध्ययन किया और बंगला पुस्तक—'निहिलिस्ट रहस्य' का अनुवाद कर उसे छपवाया। 'सुशील माला' के नाम से ग्रंथमाला निकाली। इसके अलावा अन्य कई पुस्तकें लिखी जैसे— अमेरिका को स्वतंत्रता कैसे मिली, सूफी अम्बा प्रसाद, देश मान्य बाबू मोती लाल घोष, मन की लहर, स्वदेशी रंग, क्रान्तिकारी जीवन, आत्म चरित्र और मैनपुरी षड्यंत्र केस के नेता- पं. गेंदालाल दीक्षित। इनमें से अधिकतर ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गयी।



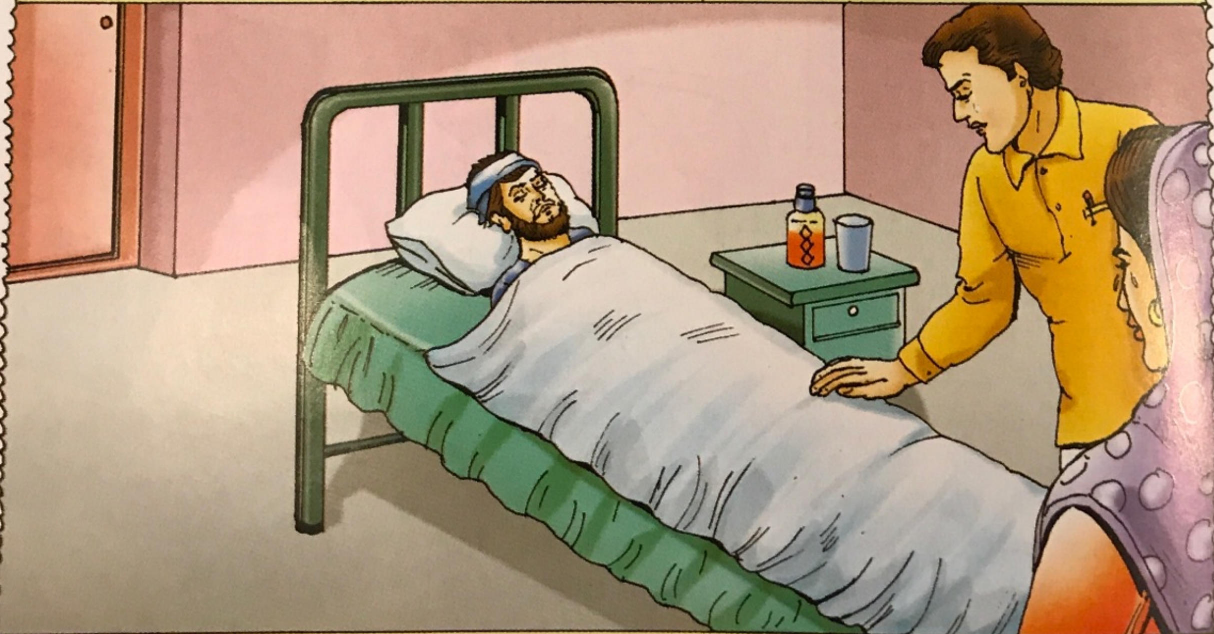
पंडित गेंदालाल दीक्षित आर्यसमाजी थे। उन्होंने शिवाजी समिति की स्थापना की थी, जिसका उद्देश्य था–शिवाजी की भांति दल बनाकर धन एकत्र कर हथियार खरीदना और दल में बांटना। गेंदालाल दीक्षित ब्रिटिश सरकार से टक्कर लेने की योजना बना रहे थे। तभी किसी मुखबिर ने पुलिस को सूचना दे दी। गेंदालाल को गिरफ्तार कर लिया गया।



रामप्रसाद बिस्मिल ने इन्हें जेल से छुड़ाने की योजना बनाई। पर पुलिस को योजना का पता चल गया। अतः इन्हें ग्वालियर से मैनपुरी जेल में भेज दिया गया। यहाँ के गंदे वातावरण के कारण उन्हें टी.बी. हो गयी। एक दिन वे दीवार फाँद कर जेल से भाग निकलने में कामयाब हो गये। बीमारी की हालत में घर पहुँचे, घर वालों ने पुलिस के डर से उन्हें घर में नहीं रखा। वहाँ से दिल्ली आकर एक प्याऊ पर पानी पिलाने का काम करने लगे।

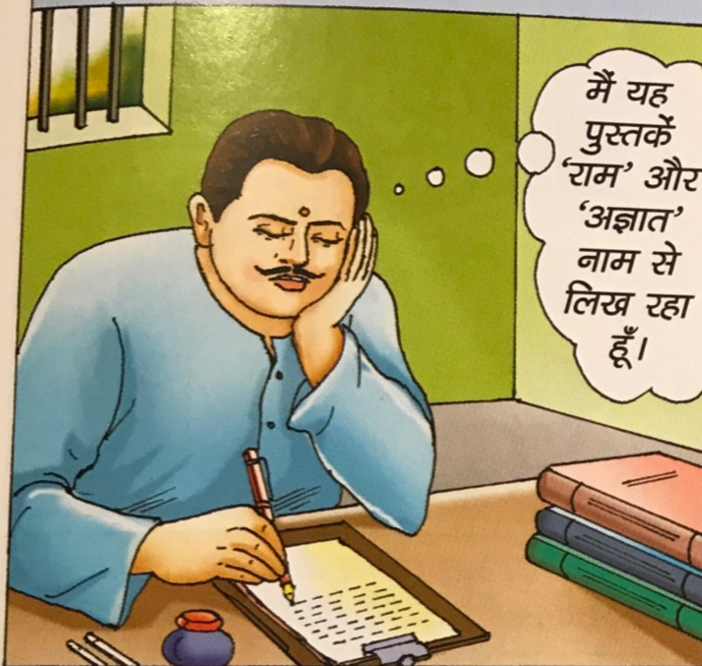


लेकिन बीमारी के कारण गेंदालाल दीक्षित की दशा बिगड़ गयी। अंत समय पर इनकी पत्नी व मित्र दिल्ली आ गये



21 दिसम्बर, 1920 को दिल्ली के सिविल हॉस्पिटल में महान् क्रान्तिकारी पंचतत्व में विलीन हो गया।

रामप्रसाद शाहजहांपुर में कपड़े बुनने का काम सीखने लगे। परन्तु काम सीखने पर भी नौकरी नहीं मिली। इस दौरान उन्होंने अपनी तीसरी पुस्तक 'कैथराईन' लिख डाली और एक पुस्तक 'क्रान्तिकारी जीवन' लिखना प्रारम्भ कर दिया।



रामप्रसाद ने क्रांतिकारियों को मदद देने के लिए जाली नोट छापने का काम शुरु किया। परन्तु इसमें सफलता नहीं मिली।



क्रांतिकारी गतिविधि को बढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता पड़ी। अतः 'काकोरी रेलवे स्टेशन' पर ट्रेन रोक कर सरकारी ख़ज़ाने को लूटने का कार्यक्रम बनाया गया, जिसका नेतृत्व स्वयं रामप्रसाद बिस्मिल ने किया। 9 अगस्त 1925 को दिन दहाड़े ट्रेन को रोक लिया गया। ट्रेन रुकते ही क्रान्तिकारियों ने चिल्लाकर कहा—



इस प्रकार ट्रेन से सरकारी ख़ज़ाना लूट लिया गया।

काकोरी लूट वाले एक दो नोट पुलिस के हाथ लगे। पुलिस ने रामप्रसाद और उनके साथियों को ख़ज़ाना छिपाते हुए पकड़ लिया और उन्हें जेल में डाल दिया।



रामप्रसाद और उनके साथियों को जेल में अलग-अलग बैरकों में रखा गया था। फिर भी मौका लगते ही ...



...कभी-कभी बातचीत कर लिया करते थे।

जेल में खुफिया पुलिस के प्रमुख, रामप्रसाद से मिले वे उन्हें सरकारी गवाह बनाना चाहते थे...



...पर रामप्रसाद ने साफ इन्कार कर दिया।

जेल में रामप्रसाद बिस्मिल से जिला कलेक्टर मिलने आए और उन्हें लालच दिया।



पूरे शहर में पुलिस की जांच और क्रांतिकारियों की धर-पकड़ शुरू हो गयी थी। लगभग छत्तीस क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया था। जिनमें से रवीन्द्र नाथ बख्शी, चन्द्रशेखर आज़ाद और अशफाकउल्ला खाँ फरार हो गए।



और कुछ क्रांतिकारी मुकदमा अदालत में आने से पहले ही छोड़ दिए गए।



राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को दक्षिणेश्वर बम केस में सजा पाने के बाद मुकदमा चलने पर लखनऊ भेज दिया गया।



रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खां के परस्पर अत्यन्त प्रेमपूर्ण सम्बन्ध थे।

अशफाक! तुम मेरे छोटे भाई के समान हो।

मैं मुसलमान और तुम आर्यसमाजी हम दोनों...



...मिलकर क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेकर देश की सेवा करेंगे।



अशफाक उन्हें भाई साहब नहीं बल्कि 'राम' कहकर बुलाया करते थे।

एक बार अशफाक बीमार पड़ गये, उन्हें तेज बुखार था। बुखार के कारण राम! राम! कहकर पुकारने लगे। परिवार के सदस्य यह शब्द सुनकर हैरान रह गये कि ये अल्लाह-अल्लाह बोलने की जगह राम-राम क्यों बोल रहे हैं। फिर उनके हिन्दू पड़ोसियों ने उनके घरवालों को बताया कि...



बेहोशी की हालत में राम-राम कहकर अपने दोस्त 'रामप्रसाद बिस्मिल को पुकार रहे हैं।



रामप्रसाद बिस्मिल को बुलाया गया। रामप्रसाद ने आकर अपने दोस्त अशफाक को पुकारा और उनके माथे पर हाथ रखा अशफाक की आँखें खुल गई।



अपने मित्र को देखकर वे भाव विभोर हो गये। तब परिवारीजन राम-राम का अर्थ समझे।

रामप्रसाद बिस्मिल बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे शायर भी थे। उनका लिखा हुआ गीत “सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है” इस गीत ने क्रांतिवीरों में एक नया उत्साह एवं देश के लिए मर मिटने का संकल्प पैदा कर दिया।



गोरखपुर जेल में सलाखों के पीछे क्रांतिवीरों ने इसी गीत द्वारा देश पर हँसते-हँसते अपने आप को न्योछावर करने की प्रेरणा ली।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैSSSS

जेल में रहकर भी रामप्रसाद बिस्मिल नियमित रूप से संध्या, ईश्वर का ध्यान व हवन करते थे।



कालकोठरी में भी उनके इस व्यवहार का जेल कर्मचारियों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे इन्हें गुरुजी कहकर बुलाने लगे।



जिस हवनकुण्ड में रामप्रसाद बिस्मिल हवन किया करते थे, वह आज भी हमारी ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर है।



9 अगस्त, 1925 काकोरी षड्यंत्र के आरोप में रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहड़ी व ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी की सजा सुनाई गयी।

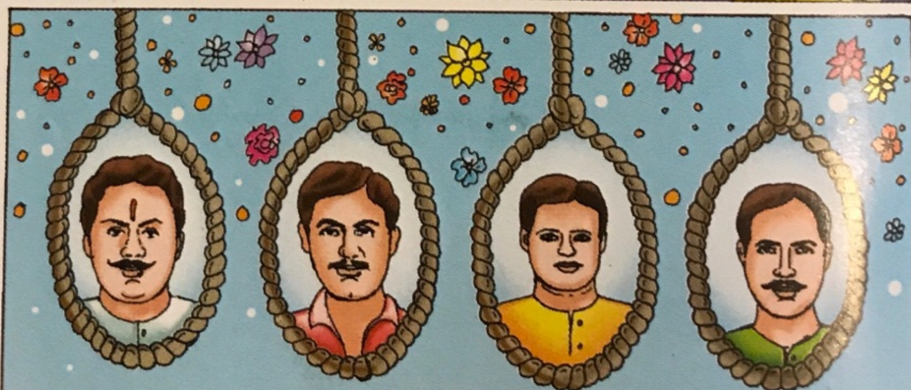
तुम्हीं लोगों ने काकोरी कांड किया है और भयंकर षड्यंत्रकारी भी हो, इसलिए तुम्हें फांसी दी जाती है।



रामप्रसाद बिस्मिल ने फाँसी के फंदे को चूमा और यह गीत गाते-गाते फाँसी पर लटक गये।

ओइम्

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है



रामप्रसाद बिस्मिल-अशफाक उल्ला खां-राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी-ठाकुर रोशन सिंह

आमतौर पर फांसी की सजा प्राप्त होने पर व्यक्ति का वजन घट जाता है लेकिन राम प्रसाद बिस्मिल का वजन बढ़ गया था।

मरते 'बिस्मिल', 'रोशन', 'लहरी', अशफाक अत्याचारों से।
होंगे पैदा सैकड़ों, इनकी रुधिर की धार से।।

समाप्त

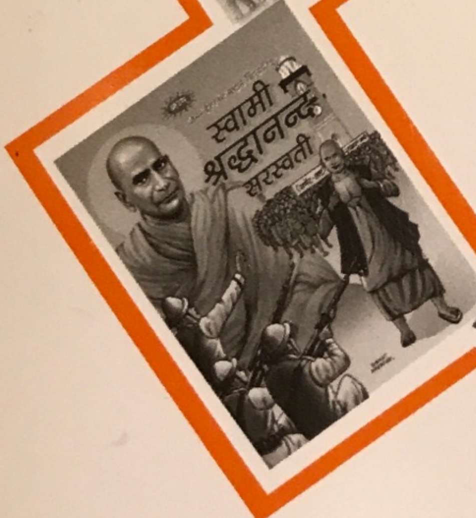
ओ३म्

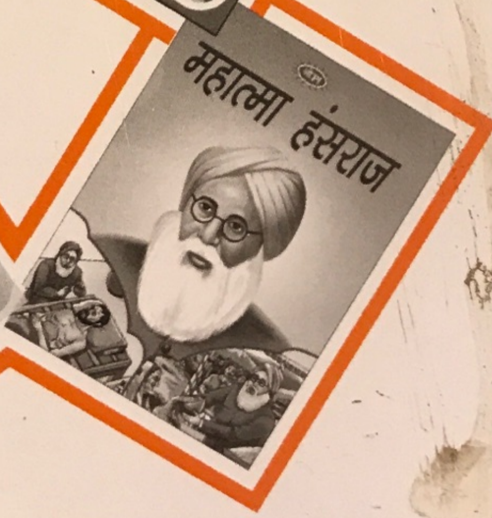



नेताजी
सुभाषचन्द्र बोस


लाला
लाजपतराय


सरदार अमर शहीद भगतसिंह


स्वामी
श्रद्धानन्द
सरस्वती


महात्मा हंसराज

हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स



मूल्य : 30/–

प्रकाशक
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली–110006
दूरभाष : 011–43781191

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23360150, 23365959
Email : aryasabha@yahoo.com,
website : delhisabha.com